

श्रीमद्भागवत स्कन्ध 8 अध्याय 17: भगवान और अदिति

14 September 2026

🙏 पाठ से पहले एक निवेदन

श्रीमद्भागवत महापुराण के ये अध्यायवार सार गीता प्रेस भागवत को मुख्य आधार मानकर तैयार किए गए हैं। ये भागवत के अध्ययन में सहायक हैं, मूल ग्रंथ का स्थान नहीं ले सकते।

अध्ययन का मुख्य और अनुशंसित मार्ग गीता प्रेस की भागवत पुस्तक से सीधा पाठ है। यात्रा में, घर से दूर, या जब पुस्तक पास न हो, तब निरंतर अध्ययन, पुनरावृत्ति और समझ के लिए इन सारों का सहारा लिया जा सकता है।



बारह दिन की शुद्ध भक्ति के पश्चात्, स्वयं परमेश्वर अदिति के समक्ष प्रकट होते हैं — चतुर्भुज, पीताम्बरधारी, शंख, चक्र और गदा लिए — और एक माता के प्रेम से द्रवित होकर, उनके अपने पुत्र रूप में जन्म लेने को सहमत होते हैं।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवत विज्जम में आपका पुनः स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिमयी यात्रा। पिछले अध्याय में ऋषि कश्यप ने शोकाकुल अदिति को पवित्र पयोव्रत सिखाया; आठवें स्कन्ध का यह सप्तदश अध्याय दिखाता है कि वह भक्ति क्या फल लाती है, और भगवान उसका उत्तर किस चकित करने वाले ढंग से देते हैं।

अध्याय की जानकारी

- ग्रन्थ: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 8 (आठवाँ स्कन्ध)
- अध्याय: 17 (सप्तदश अध्याय)
- अध्याय शीर्षक: भगवान् अदिति के पुत्र बनने को सहमत होते हैं
- मुख्य वक्ता: श्रीशुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित से कहते हुए — अदिति तथा ब्रह्मा की स्तुति और भगवान् के वचन सहित
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: ऋषि कश्यप का आश्रम
- केन्द्रीय विषय: अदिति का पयोव्रत-पालन; भगवान् का प्रकट होना; उनकी स्तुति; भगवान् का उनके पुत्र बनने का वचन; अदिति के गर्भ में उनका प्रवेश और ब्रह्मा की स्तुति
- प्रमुख श्लोक श्रेणी: स्कन्ध 8, अध्याय 17, श्लोक 1–28
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

पिछले अध्याय का सन्दर्भ

षोडश अध्याय में ऋषि कश्यप ने शोकाकुल अदिति को सान्त्वना दी और उन्हें पवित्र पयोव्रत सिखाया — भगवान् विष्णु को अर्पित बारह दिन की भक्ति, संयम और दान — यह आश्वासन देते हुए कि भगवान्, भली-भाँति प्रसन्न होकर, उनकी हार्दिक कामना पूर्ण करेंगे। यह अध्याय दिखाता है कि उन्होंने उस व्रत का कितनी निष्ठा से पालन किया, और किस प्रकार भगवान् ने उत्तर दिया।

अदिति व्रत का पालन करती हैं

अपने पति द्वारा इस प्रकार उपदेशित, अदिति ने पयोव्रत का अथक और उसके नियमों के पूर्ण अनुरूप बारह लगातार दिन पालन किया, अविभाजित बुद्धि से परमेश्वर का चिन्तन करते हुए। मन की लगाम से इन्द्रियों के उद्दण्ड अश्वों को वश में कर, और अपनी एकाग्र बुद्धि से मन को सबकी आत्मा भगवान् वासुदेव पर स्थिर कर, उन्होंने पूर्ण भक्ति से व्रत का पालन किया।

भगवान् प्रकट होते हैं

फिर, उनके व्रत के समापन पर, स्वयं परमेश्वर उनके समक्ष प्रकट हुए।

तस्याः प्रादुरभूतात भगवानादिपुरुषः ।

पीतवासाश्चतुर्बाहुः शङ्खचक्रगदाधरः ॥ ४ ॥

तस्याः प्रादुरभूतात भगवानादिपुरुषः पीतवासाश्चतुर्बाहुः शङ्खचक्रगदाधरः

अर्थ: हे प्रिय, परमेश्वर, आदिपुरुष, उनके समक्ष प्रकट हुए, पीताम्बरधारी, चतुर्भुज, शंख, चक्र और गदा धारण किए। (स्कन्ध 8, अध्याय 17, श्लोक 4)

उन्हें सहसा अपने समक्ष देखकर अदिति प्रेम से अभिभूत हो गई। वे उठीं और भूमि पर लेटकर श्रद्धा से प्रणाम किया, फिर हाथ जोड़कर उनकी स्तुति करने खड़ी हुई — किन्तु कुछ समय वे बोल न सकीं, उनकी आँखें आनन्दाश्रु से भर आईं, शरीर रोमांचित हुआ और उन्हें देखकर अंग काँपने लगे।



अपने द्वादश-दिवसीय व्रत की समाप्ति पर परम भगवान्, आदिपुरुष, अदिति के समक्ष अपने चतुर्भुज रूप में, पीताम्बर धारण किए और शंख, चक्र तथा गदा लिए प्रकट होते हैं (श्लोक 4-6)।

अपने बारह दिन के व्रत के समापन पर, परमेश्वर, आदिपुरुष, अदिति के समक्ष अपने चतुर्भुज रूप में प्रकट होते हैं, पीताम्बरधारी और शंख, चक्र तथा गदा लिए (श्लोक 4-6)।

अदिति की स्तुति

कुछ स्वस्थ होकर, काँपते स्वर में उस दिव्य देवी ने प्रेमपूर्वक श्रीहरि की स्तुति की, ऊपर देखते हुए मानो उन्हें आँखों से पी रही हों।

श्रीअदितिरुवाच

यज्ञेश यज्ञपुरुषाच्युत तीर्थपाद

तीर्थश्रवः श्रवणमङ्गलनामधेय ।

आपन्नलोकवृजिनोपशमोदयाद्य

शं नः कृधीश भगवन्नसि दीननाथः ॥ ८ ॥

श्रीअदितिरुवाच यज्ञेश यज्ञपुरुषाच्युत तीर्थपाद तीर्थश्रवः श्रवणमङ्गलनामधेय आपन्नलोकवृजिनोपशमोदयाद्य शं नः कृधीश भगवन्नसि दीननाथः

अर्थ: अदिति ने स्तुति की — हे यज्ञ के स्वामी, हे यज्ञ के अच्युत पुरुष, जिनके चरण तीर्थ हैं, जिनकी महिमा सुनने योग्य है और जिनका नाम ही सुनने में मंगलमय है, जो शरणागतों की व्यथा दूर करने प्रकट होते हैं — हमें सुख दीजिए, हे भगवन्, क्योंकि आप दीनों के नाथ हैं। (स्कन्ध 8, अध्याय 17, श्लोक 8)

उन्होंने उनकी स्तुति उस सर्वव्यापी रूप में की जो सृष्टि, पालन और संहार हेतु स्वेच्छा से माया के गुणों को धारण करते हैं, फिर भी सदैव अपने ही सत्य स्वरूप में स्थित रहते हैं, उसी माया से अस्पृष्ट और कभी मोहित न होते हुए (श्लोक 9)। उनसे, प्रसन्न होने पर, समस्त आशीर्वाद प्रवाहित होते हैं — दीर्घ आयु, धन, आधिपत्य, योग की शक्तियाँ, और सत्य का साक्षात्कार भी — फिर शत्रुओं पर विजय जैसी छोटी वस्तुओं की तो बात ही क्या (श्लोक 10)।



आनन्द से अभिभूत अदिति हाथ जोड़े उठती है और गद्गद वाणी में भगवान को पीड़ितों के रक्षक और समस्त वरदानों के स्रोत के रूप में महिमामंडित करती एक हार्दिक स्तुति अर्पित करती है (श्लोक 7-10)।

आनन्द से अभिभूत अदिति हाथ जोड़कर उठती हैं और काँपते स्वर में एक हार्दिक स्तुति अर्पित करती हैं, भगवान की दीनों के नाथ और प्रत्येक आशीर्वाद के स्रोत रूप में महिमा करती हुई (श्लोक 7-10)।

भगवान का वचन

अदिति द्वारा इस प्रकार स्तुत होकर, समस्त प्राणियों के अन्तर्यामी भगवान विष्णु ने उन्हें कोमल आश्वासन से उत्तर दिया।

श्रीभगवानुवाच

देवमातर्भवत्या मे विज्ञातं चिरकाङ्क्षितम् ।

यत् सपत्नैर्हृतश्रीणां च्यावितानां स्वधामतः ॥ १२ ॥

श्रीभगवानुवाच देवमातर्भवत्या मे विज्ञातं चिरकाङ्क्षितम् यत् सपत्नैर्हृतश्रीणां च्यावितानां स्वधामतः

अर्थ: भगवान ने कहा — हे देवमाता, मैं तुम्हारी चिरकाल से संजोई कामना भली-भाँति जानता हूँ, जो तुम्हारे उन पुत्रों से सम्बन्धित है जिनका ऐश्वर्य शत्रुओं ने हड़प लिया और जो अपने धाम से निकाल दिए गए हैं। (स्कन्ध 8, अध्याय 17, श्लोक 12)

वे यह भी जानते थे कि वह क्या देखना चाहती थीं — अपने पुत्रों को अन्ततः उनके अहंकारी शत्रुओं पर विजयी होते हुए, उन्हीं शत्रुओं की पत्नियों को रोते हुए, और अपने बच्चों को स्वर्ग में उनके यथोचित वैभव में पुनःस्थापित होते हुए (श्लोक 13-15)। किन्तु भगवान ने उनकी आशा को एक कठोर सत्य से संतुलित किया।

प्रायोऽधुना तेऽसुरयूथनाथा

अपारणीया इति देवि मे मतिः ।

यत्तेऽनुकूलेश्वरविप्रगुप्ता

न विक्रमस्तत्र सुखं ददाति ॥ १६ ॥

प्रायोऽधुना तेऽसुरयूथनाथाः अपारणीया इति देवि मे मतिः यत्तेऽनुकूलेश्वरविप्रगुप्ता न विक्रमस्तत्र सुखं ददाति

अर्थ: हे देवी, मेरे विचार से असुरों के प्रधान अभी सहज विजित नहीं होंगे, क्योंकि वे उन ब्राह्मणों के सद्भाव से सुरक्षित हैं जो मुझे सदैव प्रिय हैं; जहाँ ऐसी सुरक्षा शत्रु की रक्षा करती है, वहाँ बल मात्र से सच्चा सुख नहीं मिलता। (स्कन्ध 8, अध्याय 17, श्लोक 16)

इसीलिए भगवान ने सर्वथा भिन्न मार्ग चुना। उन्होंने कहा कि उनकी उपासना कभी व्यर्थ नहीं जाती; चूँकि उनके व्रत ने उन्हें सचमुच प्रसन्न किया था, वे सहायता का कोई अन्य उपाय खोजेंगे — देवताओं की तलवार से नहीं, अपितु स्वयं के अवतरण से। उनकी लालसा को सबसे अन्तरंग ढंग से पूर्ण करना स्वीकार करते हुए, वे अपने ही एक अंश द्वारा उनके अपने पुत्र रूप में जन्म लेंगे, जिससे समय आने पर उनके अन्य पुत्र भी सुरक्षित हो जाएँगे (श्लोक 17-18)। तब तक, उन्होंने कहा, वे उसी भक्ति से अपने पति कश्यप के पास जाएँ, उन्हें उस आसन रूप में पूजें जिसमें अब स्वयं भगवान निवास कर रहे हैं, और इस अद्भुत रहस्य को गुप्त रखें, क्योंकि जो सर्वाधिक पवित्र है वह गोपनीयता में ही सुरक्षित रहता है (श्लोक 19-20)।



उसके हृदय को जानकर भगवान् अदिति को आश्वासन देते हैं कि वे स्वयं उसके पुत्रों के कल्याण हेतु कार्य करेंगे, और उसकी अभिलाषा पूर्ण करते हुए उसके अपने पुत्र रूप में जन्म लेने को सहमत होते हैं (श्लोक 11-20)।

अपना हृदय जानते हुए, भगवान् अदिति को आश्चस्त करते हैं कि वे स्वयं उनके पुत्रों के कल्याण के लिए कार्य करेंगे, उनकी लालसा को उनके अपने पुत्र रूप में जन्म लेकर पूर्ण करने को सहमत होते हुए (श्लोक 11-20)।

अवतरण आरम्भ, और ब्रह्मा की स्तुति

फिर, अपने मन को पूर्णतः एकाग्र कर, ऋषि कश्यप — स्वयं तप से देदीप्यमान — ने श्रीहरि के एक अंश को अपने मन में प्रविष्ट हुआ अनुभव किया, और यथासमय वह दिव्य ऊर्जा अदिति में संचारित हुई। यह देखकर कि सनातन भगवान् अदिति के गर्भ में प्रविष्ट हुए हैं, ब्रह्मा आए और पवित्र तथा रहस्यमय नामों से उनकी स्तुति की।

नमस्ते पृश्निगर्भाय वेदगर्भाय वेधसे ।

त्रिनाभाय त्रिपृष्ठाय शिपिविष्टाय विष्णवे ॥ २६ ॥

नमस्ते पृश्निगर्भाय वेदगर्भाय वेधसे त्रिनाभाय त्रिपृष्ठाय शिपिविष्टाय विष्णवे

अर्थ: हे विष्णु, आपको नमस्कार, जो कभी पृश्नि के पुत्र रूप में प्रकट हुए, जिनमें वेद निवास करते हैं, जो विधाता हैं, जो तीनों लोकों को अपने भीतर धारण करते हैं और समस्त देहधारियों में अन्तर्यामी रूप में व्याप्त हैं। (स्कन्ध 8, अध्याय 17, श्लोक 26)

ब्रह्मा ने उनकी स्तुति विश्व के आदि, मध्य और अन्त रूप में की, स्वर्ग से गिरे देवताओं के परम आश्रय रूप में, जैसे डूबते हुए के लिए नौका। भगवान् के इस प्रकार अदिति के गर्भ में अवतरित होने से, दिव्य वामन रूप में उनके प्रकट होने का मंच सज जाता है।



भगवान का एक अंश ऋषि कश्यप के मन में और उनके माध्यम से अदिति के गर्भ में प्रवेश करता है; इस प्रकार अवतरित शाश्वत भगवान को जानकर ब्रह्मा आकर उन्हें पवित्र नामों से स्तुत करते हैं (श्लोक 21-28)।

भगवान का एक अंश ऋषि कश्यप के मन में और उनके द्वारा अदिति के गर्भ में प्रविष्ट होता है; सनातन भगवान को इस प्रकार अवतरित देखकर, ब्रह्मा आते हैं और पवित्र नामों से उनकी स्तुति करते हैं (श्लोक 21-28)।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. निष्ठापूर्ण भक्ति का उत्तर स्वयं भगवान देते हैं। अदिति के विनम्र व्रत ने परमेश्वर को उनकी आँखों के समक्ष स्वयं खींच लिया। जब हम पूर्ण हृदय से भगवान की ओर मुड़ते हैं, वे उत्तर देते हैं (श्लोक 3-4)।
2. भगवान हमारी गहनतम कामना पहले से जानते हैं। इससे पूर्व कि अदिति पूर्ण रूप से बोल पातीं, भगवान ने उन्हें बता दिया कि वे उनकी चिरकाल से संजोई कामना जानते हैं। भगवान हृदय को हमारे व्यक्त करने से पूर्व ही समझते हैं (श्लोक 12)।
3. कृपा वहाँ सफल होती है जहाँ बल असफल होता है। भगवान अदिति से स्पष्ट कहते हैं कि असुर-प्रधान, ब्राह्मणों के सद्भाव से सुरक्षित होने के कारण, बल से पराजित नहीं किए जा सकते — किन्तु सच्ची श्रद्धा से की गई उपासना कभी व्यर्थ नहीं जाती, इसलिए वे एक शान्त, सुनिश्चित मार्ग चुनते हैं, स्वयं उनके पुत्र बनकर (श्लोक 16-18)।
4. भगवान माँगे से अधिक देते हैं। अदिति ने अपने पुत्रों के लिए सहायता की आशा की; भगवान ने उन्हें स्वयं को दे दिया, उनके अपने पुत्र बनने को सहमत होकर। भगवान का उत्तर प्रायः हमारी प्रार्थनाओं से बढ़कर होता है (श्लोक 12-20)।
5. भक्ति भक्त को रूपान्तरित करती है। भगवान को देखकर अदिति काँपीं, रोईं, और आनन्द से बोल न सकीं। भगवान का सच्चा दर्शन हृदय को प्रेम से अभिभूत कर देता है (श्लोक 5-6)।
6. भगवान गिरे हुआँ के आश्रय हैं। ब्रह्मा उनकी स्तुति डूबने वालों के लिए नौका रूप में करते हैं। हम कितने ही नीचे गिरे हों, भगवान हमारी सुनिश्चित शरण बने रहते हैं (श्लोक 28)।

एक भाक्तेमय चिन्तन

इस अध्याय में एक कोमलता है जो इसकी भव्यता के बीच सहज ही चूक सकती है। एक माता ने अपने बच्चों का घर और ऐश्वर्य खो दिया है, और बारह दिन की विनम्र, दुग्ध-आहारी उपासना के पश्चात, समस्त लोकों के स्वामी उसके समक्ष खड़े हैं। किन्तु देखिए वे कैसे उत्तर देते हैं। वे केवल दूर से उसकी समस्या ठीक करने का वचन नहीं देते। वे उसे बताते हैं कि वे उस कामना को पहले से जानते हैं जिसे उसने इतने समय से ढोया है — और फिर वे उसे मात्र विजय नहीं, अपितु स्वयं को देते हैं, उसके अपने पुत्र बनने को सहमत होकर। यह भगवान की आश्चर्यजनक उदारता है। हम अपनी छोटी माँगें लेकर उनके पास आते हैं, यह या वह सहायता या राहत माँगते हुए, और वे हमें गहनतम अन्तरंगता में खींचकर उत्तर देते हैं, जहाँ हमने केवल एक उपहार माँगा वहाँ स्वयं को देते हुए। अदिति के अश्रु, उनका कँपन, उनका बोल तक न पाना, उस हृदय की स्वाभाविक प्रतिक्रिया है जो सहसा स्वयं को समस्त अपेक्षा से परे प्रेमित पाता है। यह अध्याय हमें आमन्त्रित करता है कि हम अपनी लालसाएँ भगवान के समक्ष माँग रूप में नहीं, अपितु प्रार्थना रूप में लाएँ, इस भरोसे के साथ कि जो हमारे हृदय को पहले से जानते हैं वे केवल हमारी माँग से नहीं, अपितु अपनी उपस्थिति की निकटता से उत्तर देंगे।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज अपने हृदय की एक चिरसंजोई कामना को चुपचाप भगवान के समक्ष लाएँ — माँग रूप में नहीं, अपितु भरोसे से अर्पित प्रार्थना रूप में। अदिति को स्मरण करें, जिनके विनम्र व्रत का उत्तर भगवान ने स्वयं दिया, और जिन्हें केवल सहायता नहीं, अपितु उनकी उपस्थिति मिली। कोमलता से दोहराएँ “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय,” अपनी लालसा उनके हाथों में रखते हुए और भरोसा करते हुए कि जो आपके हृदय को पहले से जानते हैं वे उस ढंग से उत्तर देंगे जो वस्तुतः श्रेष्ठ है — प्रायः आपकी माँग से कहीं अधिक।

उपसंहार

इस अध्याय की सबसे गहन शिक्षा इसकी भव्यता के बीच सहज ही चूक सकती है: जब बल देवताओं को सच्चा सुख नहीं दे सकता था, भगवान ने सेना नहीं भेजी — वे स्वयं निकट आए, अपने पुत्रों की लड़ाई दूर से लड़ने के बजाय अदिति के ही गर्भ में प्रवेश करते हुए। कृपा, विजय नहीं, उनका चुना हुआ साधन है, और अटूट श्रद्धा से की गई उपासना कभी व्यर्थ नहीं जाती। जैसे ब्रह्मा की स्तुति कश्यप के आश्रम पर बिखरती है, भगवान के पुनः लोकों में विचरण करने का मार्ग तैयार है — इस बार दिव्य वामन रूप में, जिनका सौम्य निवेदन वह कर दिखाएगा जो कोई युद्ध नहीं कर सकता था।

श्रीमद्भागवत का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जाग्रत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ एवं आभार

- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), आठवाँ स्कन्ध, सप्तदश अध्याय, पृष्ठ 806–810।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज़डम् • विश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।

- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुरूप प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, निष्ठापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण में दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश-रूप में हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद अथवा भाष्य का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक से किसी सम्बद्धता अथवा उसके अनुमोदन का संकेत नहीं किया गया है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-8-chapter-17-the-lord-agrees-to-become-aditis-son-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

